श्रीमालीजी के समृद्धि सूत्र

सुख-समृद्धि की कामना किसे नहीं होती, सभी चाहते हैं कि उनका जीवन भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ गुजरे। उन्हें किसी बात की कमी नहीं रहे, जो मन की इच्छा हो उसे वे पूरा कर पायें, स्वयं की ही नहीं वरन् अपने परिवार के सदस्यों की इच्छाओं को भी पूर्ण कर पायें। प्रत्येक व्यक्ति की कामना होती है कि वे अपने बच्चों को, अपने माता-पिता को, अपनी पत्नी को अच्छे जीवन यापन के साधन मुहैय्या करवा सकें, परन्तु ऐसा सौभाग्य सभी का नहीं होता। बहुत से लोग परिश्रम करने के पश्चात् भी इस मुकाम पर नहीं पहुँच पाते। यहां तक कि कुछ लोगों को तो दो वक्त की रोटी भी मुश्किल से प्राप्त होती है। यदि आप भी अपने जीवन में मुश्किल से जूझ रहे हैं, कठिनाईयों से लड़ रहे हैं तो यह स्तम्भ आपके लिये ही प्रारम्भ किया जा रहा है। इस स्तम्भ में गुरु जी आपको कुछ ऐसे काम के प्रयोग बतलायेंगे जिन्हें सम्पन्न कर आप भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर पायेंगे। अपनी इच्छाओं को पूर्ण कर पायेंगे। आईये पढ़ें 'गुरु जी के समृद्धि सूत्र' और सफल हो जायें...!!

श्रीलक्ष्मी+गणेश यंत्र प्रयोग

यदि आप चाहते हैं कि आपका जीवन धन-धान्य से पूर्ण हो, ऐश्वर्यशाली हो, आप समस्त भौतिक सुख-सुविधाओं के साधन जुटा सकें, और इस जीवन में वह सबकुछ भोग सकें जिसकी आप इच्छा रखते हैं तो अब समय आ गया है अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करने का। अतः बिना समय गंवाये माँ लक्ष्मी और भगवान गणेश के संयुक्त यंत्र 'लक्ष्मी+गणेश यंत्र' की आराधना करें।

मां लक्ष्मी प्रत्येक व्यक्ति के संपूर्ण जीवन की आराध्या है, संसार का आधार हैं। मां महालक्ष्मी मात्र धन ही प्रदान नहीं करती क्योंकि मात्र धन से ही सुख शांति नहीं मिलती। धन से भोजन तो खरीदा जा सकता है लेकिन भूख और स्वास्थ्य नहीं। रुपया-पैसा हजारों लाखों व्यक्तियों के पास हो सकता है लेकिन जरुरी नहीं कि रुप, यौवन, प्रभुता, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य मिले? मां लक्ष्मी की कृपा से धन, यौवन, रुप, पद, प्रतिष्ठा, यश, कीर्ति सभी उपलब्ध हो जाता है, इसलिए कि मां लक्ष्मी सभी कुछ देने में समर्थ है।

विघ्ननिवारण के लिये गणेशजी सुप्रसिद्ध हैं। न केवल विघ्नविनाश ही, वरन् प्रत्येक कामना भी इनकी उपासना से पूर्ण होती है। हिन्दू धर्म का कोई भी मांगलिक कार्य बिना भगवान गणपति की पूजा के प्रारम्भ नहीं होता। इतना ही नहीं, प्रत्येक देवी-देवता की आराधना-साधना करने से पूर्व भगवान गणपति से ही प्रार्थना की जाती है, कि वे मेरी साधना पूर्ण होने में सहायक बनें। इतना महत्व किसी अन्य देवी देवता को नहीं प्राप्त है, यानी हिन्दू धर्म में अतिमहत्वपूर्ण देव है देवाधिदेव गणपति।

जिस तरह से लक्ष्मी और गणेश अपने-अपने क्षेत्र में अलग-अलग महारत रखते हैं और अपने-अपने भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करते रहते हैं। अगर यह दो शक्तियां आपस में मिल जाये तो आप एक ही यंत्र में सभी मनोकामनाओं की पूर्ति कर सकते हैं, आप पा सकते हैं अपार धन-यश-वैभव। तो फिर आज ही प्राण-प्रतिष्ठित एवं सिद्ध 'लक्ष्मी-गणेश यंत्र' को अपने घर पर स्थापित कीजिये। साथ ही निम्न मंत्र की 7 माला सात बुधवार को प्रातःकाल में नियमित रूप से जपें।

मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रियै नमो भगवति मम् समृद्धौ ज्वल ज्वल मां सर्व सम्पदं देहि देहि ममा अलक्ष्मी नाशय हुं फट् स्वाहा।।

श्रीलक्ष्मी-गणेश यंत्र की पूजा से सुख-शांति व श्रीवृद्धि होती है। घर में वातावरण आनंददायक होता है। व्यापारियों के व्यवसाय में बाधा दूर होकर धन का आवागमन सुचारू रूप से होता है। पूजन यंत्र न्यौछावर- 750/-

पारद गणपति के प्रयोग

रसराज रससिद्ध पारद सभी धातुओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। भगवान शंकर के शक्ति रुप होने के कारण सभी देवी-देवताओं के द्वारा वंदनीय एवं स्पृहनीय है। यह अनेक चैतन्य मंत्रात्मक क्रियाओं से संस्कारित होकर जिस किसी भी घर में भगवान शिव का प्रतीक शिवलिंग, लक्ष्मी प्रतिमा, गणेश प्रतिमा तथा दुर्गा प्रतिमा के रुप में स्थापित होता है वह घर, वह परिवार, सर्वत्र मंगलमय सुखद एवं शांति का अनुभव करता है। सत्य तो यह है कि पारद पूर्ण संसार का एक आधारभूत तत्व है इसलिए धर्म, अर्थ और काम मोक्ष प्राप्ति का मूलभूत साधन भी है। जिस घर में यह प्रतिमा स्थापित हो तथा पूजन हो तो समस्त वातावरण इसके कारण धन-धान्य से पूर्ण होकर आध्यात्ममय बन जाता है।

मंत्रों से आबद्ध स्वर्णग्रास युक्त पारद से निर्मित प्रतिमा तो अपने आप में चैतन्य होती है इसकी उपस्थिति ही अपने आप में पूर्णता की द्योतक मानी जाती है, अतः प्रयास करके मंत्रों से आबद्ध पारदमूर्ति किसी भी रुप में घर में स्थापित करनी चाहिये। ईश्वरीय प्रदत्त इस दुर्लभ देन को आपके लिए, आपके परिवार के लिए और भावी पीढ़ी के लिए आपको सौंप रहे हैं।

- पारद गणपति की स्थापना ही संकटों का निवारण है।
- पारद गणपति की स्थापना ऋद्धि-सिद्धि का आगमन है।
- पारे से निर्मित मंत्र सिद्धि प्राण-प्रतिष्ठायुक्त ''पारद गणपति'' जिसकी पूजा तो देवता भी करते हैं। अपने निवास में कार्य स्थल में अवश्य स्थापित करें।

♦ पारद गणपति ऋद्धि-सिद्धि के अधिकारी देवता माने गये हैं अतः बुधवार के दिन इनकी स्थापना ही पूर्ण सफलता की सूचक है।

♦ यदि पारद गणपति को बुधवार के दिन अपनी दुकान में स्थापना करें तो निरंतर वृद्धि होती रहती है।

♦ पारद गणपति पर नित्य 11 पुष्प चढ़ाये और इस प्रकार 11 दिन करें तथा "ऊँ गं गणपतयै नमः" की एक माला मंत्र जप करें तो सभी विघ्नों का नाश होता है और दरिद्रता समाप्त होती है।

♦ यदि घर में पारद गणपति स्थापित हो और किसी बुधवार को उस पर गुलाब का एक फूल चढ़ाया जाये तथा "ऊँ ह्रीं श्रीं गं गणपतयै नमः" मंत्र की एक माला मंत्र जप किया जाये और फिर थोड़ा सा इत्र रूई में लगाकर अपने कानों में लगाये तो उसकी सर्वत्र विजय होती है।

♦ यदि पारद गणपति के सामने "ऊँ गणायै पूर्णत्व सिद्धि देहि देहि नमः" मंत्र का जप एक माला करें और इस प्रकार 11 दिन करें तो घर में अटूट धन प्राप्त होने की संभावनायें बनती है।

पारद गणपति न्यौछावर राशि- 1100 रु. से आरम्भ

स्फटिक शिवलिंग के प्रयोग

स्फटिक के शिवलिंग की विशेष रूप से पूजा अर्चना की जाती है। कारण कि एक तो यह वैसे ही अपूर्व ऊर्जा का भण्डार होते हैं और दूसरे जब इनमें देव तत्व का समावेश हो जाता है तो यह अद्भुत शक्ति के स्तोत्र बन जाते हैं। फिर ऐसी कोई कामना नहीं रह जाती है जो इनकी सहायता से पूर्ण ना की जा सके। भगवान शिव की कृपा से अपने सभी अपूर्ण स्वप्नों को पूर्णता प्रदान करें। स्फटिक लिंग की आराधना तथा पूजन सभी सौभाग्य का प्रतीक हैं। धन, धान्य तथा प्रतिष्ठा के साथ पूजक को वह संपूर्ण आरोग्य भी प्रदान करता हैं। जो व्यक्ति अपने घर में स्फटिक शिवलिंग की प्रतिष्ठा कर नित्य पूजा करता हैं, उसके घर से रोग, शोक और दरिद्रता समाप्त हो जाती हैं, वहा लक्ष्मी का वास होता हैं।

जो साधक श्रद्धा पूर्वक प्रतिदिन स्फटिक शिवलिंग का अर्चन और पूजन करता हैं, वह सभी पापों से मुक्त होकर शिव स्वरूप को प्राप्त करता हैं।

स्फटिक शिवलिंग न्यौछावर- 1100/- से आरम्भ

श्रीलक्ष्मी फल, लक्ष्मी प्राप्ति का सरल माध्यम

संसार में प्रत्येक व्यक्ति आपको लक्ष्मी के पीछे भागता दिखाई देगा। हर कोई लक्ष्मी को प्रसन्न करने पर तुला है, बस किसी तरह उसकी कृपा दृष्टि हो जाये। लक्ष्मी का प्रिय फल है श्रीलक्ष्मी फल, 'श्री' लक्ष्मी को भी कहा जाता है। श्रीलक्ष्मी फल का तंत्र शास्त्र में बहुत महत्व है। कहा जाता है जिसके पास श्रीलक्ष्मी फल होता है लक्ष्मी वहाँ खिंची चली आती है। आईये जाने श्रीलक्ष्मी फल के कुछ तांत्रिक प्रयोग-

● इसे किसी शुभ दिवस पर घर ले आयें और धो-पोंछकर, एकान्त पवित्र स्थान में, कपड़े में लपेट कर रखें। (स्नान पूजा के बाद पूरी पवित्रता से यह साधना करें) सिंदूर, कपूर, लौंग, छोटी इलायची चढ़ाये, धूप दीप दें और कोई मुद्रा (सिक्का) अर्पित करें! तदुपरान्त 7 या 9 या 11 माला मन्त्र का जप करें। फिर उसे किसी कटोरी में (कपड़े सहित) रख दें। उसकी नित्यप्रति देव-प्रतिमा की भांति सिंदूर, धूप, दीप से पूजा करते रहें। कभी कभी सिक्के भी चढ़ाते रहें। 'श्रीलक्ष्मी फल' की यह साधना द्रव्यदायी होती है। ऐसा विधिवत् पूजित 'श्रीलक्ष्मी फल' जहाँ भी रहता है-वहाँ लक्ष्मी जी की पूर्ण कृपा रहती है।

"ॐ श्रीं श्रियै नमः"

● आप अपनी दूकान, प्रतिष्ठान, कार्यालय-जहाँ भी लेन देन या कोई व्यवसाय होता हो, यह मन्त्र सिद्ध 'श्रीलक्ष्मी फल' किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। उसे नित्य धूप दीप दें और कोई सिक्का चढ़ाकर 7बार मन्त्र जप द्वारा स्तुति करें। यह प्रयोग उस प्रतिष्ठान दूकान की आर्थिक स्थिति में लाभकारी परिवर्तन कर देगा।

● अनाज के गौदाम (अन्न भण्डार) में 'श्रीलक्ष्मी फल' रखने से वह कभी रिक्त नहीं होता, उसमें सदैव अन्न का ढेर रहता है। यदि कीड़े मकोड़े, चुहे और आग पानी से सुरक्षित रखा जा सके, तो अन्न का संग्रह सर्वश्रेष्ट होता है-

धान्यानां संग्रहों राजनुत्तम सर्व संग्रहहात्।
विक्षिप्तं हि मुखे रत्नं न कुर्यात् प्राण धारणम्।।

● यदि आपको गोलक (गल्ला) से प्रेम है, तो उसमें बड़ा छेद बनाकर पूजित शोधित 'श्रीलक्ष्मी फल' रख दें, तदुपरान्त गोलक का वह छेद बन्द कर दें- केवल सिक्का डालने भर की दरार रह जाये। गोलक को नित्य धूप दीप दें और सुविधानुसार उसमें पैसे भी डालते रहें। इस प्रयोग से वह अपेक्षाकृत कम समय में ही भर जायेगी।

श्री लक्ष्मीफल न्यौछावर रु. 151/-

कनकधारा पूजन यंत्र के प्रयोग

कनकधारा यंत्र के पूजन से जीवन में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहता।

● यह यंत्र यदि घर में स्थापित होता है तो कई तरह के आर्थिक श्रोत बनते हैं और आर्थिक उन्नति प्रारम्भ हो जाती है।

● यदि कनकधारा यंत्र घर में है और किसी भी शुभ तिथि को कनकधारा यंत्र के चारों और 11 दीपक लगा कर निम्न मंत्र "ऊँ ह्रीं श्रीं कनकधारायै श्रीं ह्रीं नमः" का 11 बार उच्चारण करें तो निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है।

● कनकधारा यंत्र को दुकान में रखने से व्यापार में बेतहाशा वृद्धि होने लगती है।

● कनकधारा यंत्र को दुकान में उस स्थान पर रखें जहां ग्राहक की दृष्टि पड़ती हो तो निरन्तर व्यपार वृद्धि होती रहती है।

● पूर्ण पारिवारिक उन्नति के लिये कनकधारा यंत्र को घर में स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है। पर ध्यान रहें कि कनकधारा यंत्र मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त होना चाहिये।

● कनकधारा यंत्र भी श्री सिद्धी का प्रतीक है घर में लक्ष्मी की पूर्ण कृपा प्राप्ति हेतु इस यंत्र को स्थापित करना चाहिए। घर में इस यंत्र को इस तरह से लगाये कि घर में आने-जाने वाले व्यक्ति की नजर उस पर पड़े इस बात का पूरा ध्यान रखें कि यंत्र प्राण-प्रतिष्ठित हो, यंत्र को पूर्वान्मुखी होकर बाजोट पर किसी पात्र में चावल की ढ़ेरी पर स्थापित करे फिर कुंकुम का तिलक कर कलावा चढ़ाये अब धूप-दीप करें। यदि आंवले (हरे या सुखे) मिल सकें तो 11 आंवले इसके पास रखें। इन आंवलों की भी पूजा करें। फिर रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की 1 माला जपें।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कनकधारायै श्रीं ह्रीं नमः।।

जप पूर्ण करने के पश्चात् यंत्र को अपने घर में किसी शुभ स्थान पर रख दें एवं सभी आंवलों पर काजल से अपने घर के सदस्यों का नाम लिख कर उन्हें छत पर खडें होकर उत्तर दिशा की ओर उछाल दें।

कनकधारा यंत्र न्यौछावर- 750/- ♦♦